लाल किताब टेवा

Name - Sample
Date - 18:10:2005
Time - 17:30:00
POB - ballia (Bihar) India
Longitude - 084:10:00 E
Latitude - 025:45:00 N

MindSutra Software Technologies
MindSutra Software Technologies
MindSutra Software Technologies

© lalkitabnadi.com

श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री–पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ग्रह स्थिति (पराशरी)

सूर्य	तुला 01:16:13 चित्रा (3) नीच राशि	चन्द्रमा	मेष 14:09:26 भरणी (1) सम राशि
मंगल (व.)	मेष 27:24:57 कृतिका (1) स्व राशि	बुध	तुला 20:30:22 विशाखा (1) मित्र राशि
बृहस्पति (अ.)	तुला 04:24:16 चित्रा (4) शत्रु राशि	शुक्र	वृश्चिक 17:31:20 ज्येष्ठा (1) सम राशि
शनि	कर्क 16:16:01 पुष्य (4) स्व नक्षत्र	राहु	मीन 19:00:12 रेवती (1) सम राशि
केतु	कन्या 19:00:12 हस्ता (3) सम राशि	हर्शल (व.)	कुम्भ 13:14:17 शतभिषा (2) सम राशि
नेपच्यून (व.)	मकर 20:54:00 श्रवण (4) सम राशि	प्लूटो	वृश्चिक 28:26:51 ज्येष्ठा (4) सम राशि
लग्न	मेष 04:42:25 अश्विनी (2)	10वां कस्प	मकर 25:41:22 पूर्वाषाढ़ (4) .....

ग्रह स्थिति (पराशरी)

	ग्रह	व/अ		राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC	लग्न		♈	मेष	04:42:25	अश्विनी (1)	2		
☉	सूर्य		♎	तुला	01:16:13	चित्रा (14)	3	दारा	नीच राशि
☽	चन्द्रमा		♈	मेष	14:09:26	भरणी (2)	1	अपत्या	सम राशि
♂	मंगल	व.	♈	मेष	27:24:57	कृतिका (3)	1	आत्म	स्व राशि
☿	बुध		♎	तुला	20:30:22	विशाखा (16)	1	अमात्य	मित्र राशि
♃	बृहस्पति	अ.	♎	तुला	04:24:16	चित्रा (14)	4	ज्ञाति	शत्रु राशि
♀	शुक्र		♏	वृश्चिक	17:31:20	ज्येष्ठा (18)	1	भ्रात्रि	सम राशि
♄	शनि		♋	कर्क	16:16:01	पुष्य (8)	4	मात्रि	स्व नक्षत्र
☊	राहु		♓	मीन	19:00:12	रेवती (27)	1		सम राशि
☋	केतु		♍	कन्या	19:00:12	हस्ता (13)	3		सम राशि
♅	हर्षल	व.	♒	कुम्भ	13:14:17	शतभिषा (24)	2		सम राशि
♆	नेपच्यून	व.	♑	मकर	20:54:00	श्रवण (22)	4		सम राशि
♇	प्लूटो		♏	वृश्चिक	28:26:51	ज्येष्ठा (18)	4		सम राशि

लग्न कुण्डली

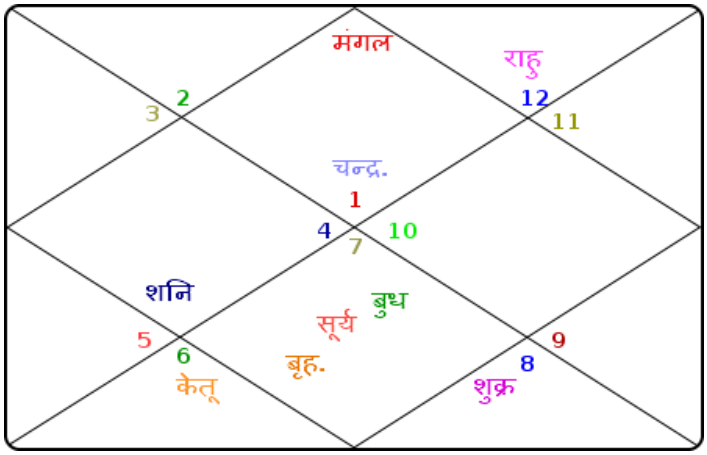

नवांश कुण्डली

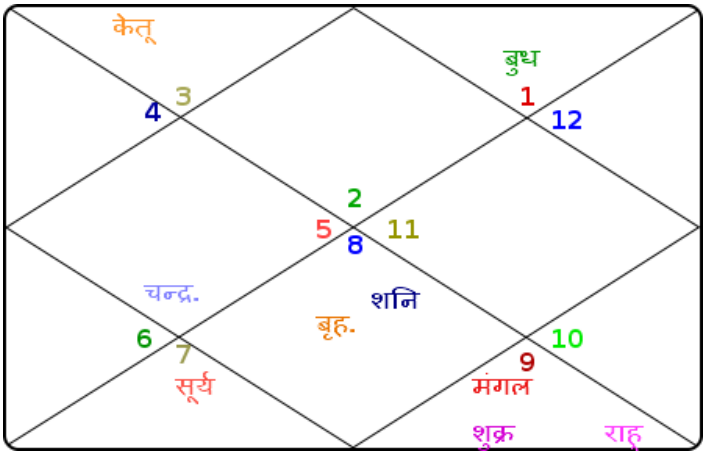

लाल किताब में ग्रह

सूर्य

भाव न. 7, राशिफल, नीचस्थ, शत्रु के घर में, अशुभ भाव में

चन्द्रमा

भाव न. 1, शुभ भाव में

मंगल

भाव न. 1, ग्रहफल, अपने घर का, जन्मदिन का, भाग्योदय का, शुभ भाव में, साथी (शनि)

बुध

भाव न. 7, स्वभाव (केतु), पक्के घर का, मित्र के घर में, शुभ भाव में, साथी (शुक्र)

बृहस्पति

भाव न. 7, राशिफल, पितृ ऋण, शत्रु के घर में, अशुभ भाव में, साथी (शनि)

शुक्र

भाव न. 8, स्त्री ऋण, अशुभ भाव में

शनि

भाव न. 4, नेक स्वभाव, शत्रु के घर में, अशुभ भाव में, साथी (मंगल,बुध,गुरू)

राहु

भाव न. 12, ग्रहफल, नीचस्थ, पक्के घर का, अपने घर का, जन्मसमय का, अशुभ भाव में, साथी (केतु)

केतु

भाव न. 6, ग्रहफल, नीचस्थ, पक्के घर का, अपने घर का, अशुभ भाव में, साथी (राहु)

ग्रह स्थिति (लाल किताब)

लाल किताब टेवा

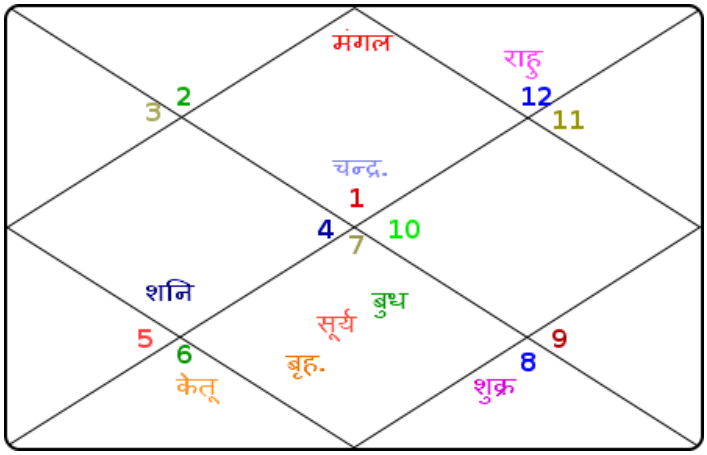

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

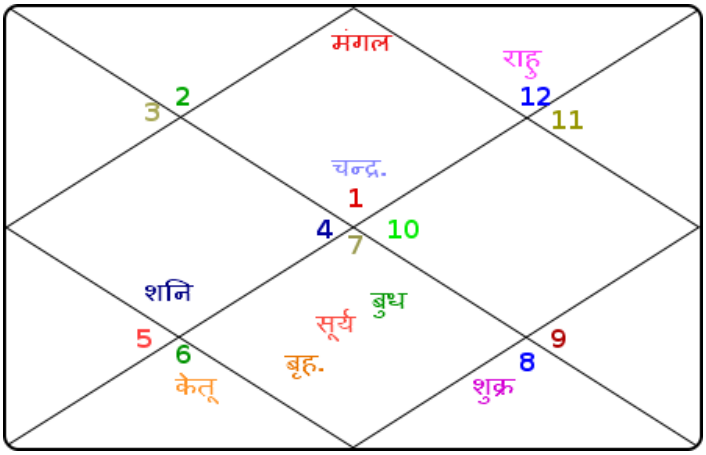

ग्रह योग

सूर्य. बुध	(युति), मंगल (नेक), औलाद जिंदा रखने का मालिक
सूर्य. बृहस्पति	(युति), चन्द्रमा, वाल्दैनी खुन (वीर्य)
मंगल. बुध	(दृष्टि–100), शनि (राहु), सेहत/बीमारी
बुध. शुक्र	(साझी दिवार), सूर्य, स्वास्थ्य/सेहत

ग्रह दृष्टि (लाल किताब)

ग्रह	मुख्य	मददगार	टकराव	बुनियाद	दुश्मन (धोखा)	साझी दिवार	अचानक चोट
सूर्य					शनि	शुक्र	
चन्द्रमा	सूर्य(100), बुध(100), बृहस्पति(100)		शुक्र			शनि	
मंगल	सूर्य(100), बुध(100), बृहस्पति(100)		शुक्र			शनि	
बुध					शनि	शुक्र	
बृहस्पति					शनि	शुक्र	
शुक्र		राहु		शनि			केतु
शनि		शुक्र		राहु	चन्द्रमा, मंगल	सूर्य, बुध, बृहस्पति	केतु
राहु		शनि	सूर्य, बुध, बृहस्पति	शुक्र		चन्द्रमा, मंगल	
केतु	राहु(25)		चन्द्रमा, मंगल			सूर्य, बुध, बृहस्पति	शुक्र, शनि

लाल किताब लग्न कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

सामान्य दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्र	1 0 0			1 0 0	1 0 0				
मंगल	1 0 0			1 0 0	1 0 0				
बुध									
बृह									
शुक								2 5	
शनि									
राहु									
केतु								2 5	

ग्रहों की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	केतु
सूर्य		✔	✔						
चन्द्र	✔			✔	✔				
मंगल	✔			✔	✔	✔	✔		
बुध		✔	✔						
बृह		✔	✔						
शुक									
शनि		✔	✔						✔
राहु						✔	✔		✔
केतु								✔	

टक्कर की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्र						✔			
मंगल						✔			
बुध									
बृह									
शुक									
शनि									
राहु	✔			✔	✔				
केतु		✔	✔						

पाये की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्र									
मंगल									
बुध									
बृह									
शुक							✓		
शनि								✓	
राहु						✓			
केतु									

विश्वासघात की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	केतु
सूर्य							✓		
चन्द्र									
मंगल									
बुध							✓		
बृह							✓		
शुक									
शनि		✓	✓						
राहु									
केतु									

सहचरी दिवार की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	केतु
सूर्य							✓		
चन्द्र							✓		
मंगल							✓		
बुध							✓		
बृह							✓		
शुक	✓			✓	✓				
शनि									
राहु		✓	✓						
केतु	✓			✓	✓				

अचानक प्रहार की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	केतु
सूर्य		✔	✔						
चन्द्र	✔			✔	✔				
मंगल	✔			✔	✔				
बुध		✔	✔						
बृह		✔	✔						
शुक									
शनि									✔
राहु									
केतु							✔		

परस्पर सहयोग की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्र									
मंगल									
बुध									
बृह									
शुक								✔	
शनि						✔			
राहु							✔		
केतु									

लाल किताब 35 वर्षीय चक्र	दशारम्भ जन्म समय का ग्रह : राहु	दशारम्भ दिनांक : 18:10:2005

प्रथम चक्र

राहु दशा 6 वर्ष

मंगल	18/10/2005
केतु	18/10/2007
राहु	18/10/2009

केतु दशा 3 वर्ष

शनि	18/10/2011
राहु	18/10/2012
केतु	18/10/2013

बृहस्पति दशा 6 वर्ष

केतु	18/10/2014
बृहस्पति	18/10/2016
सूर्य	18/10/2018

सूर्य दशा 2 वर्ष

सूर्य	18/10/2020
चन्द्रमा	18/06/2021
मंगल	16/02/2022

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष

बृहस्पति	18/10/2022
सूर्य	16/02/2023
चन्द्रमा	18/06/2023

शुक्र दशा 3 वर्ष

मंगल	18/10/2023
शुक्र	18/10/2024
बुध	18/10/2025

मंगल दशा 6 वर्ष

मंगल	18/10/2026
शनि	18/10/2028
शुक्र	18/10/2030

बुध दशा 2 वर्ष

चन्द्रमा	18/10/2032
मंगल	18/06/2033
बृहस्पति	16/02/2034

शनि दशा 6 वर्ष

राहु	18/10/2034
मंगल	18/10/2036
शनि	18/10/2038

द्वितीय चक्र

राहु दशा 6 वर्ष

मंगल	18/10/2040
केतु	18/10/2042
राहु	18/10/2044

केतु दशा 3 वर्ष

शनि	18/10/2046
राहु	18/10/2047
केतु	18/10/2048

बृहस्पति दशा 6 वर्ष

केतु	18/10/2049
बृहस्पति	18/10/2051
सूर्य	18/10/2053

सूर्य दशा 2 वर्ष

सूर्य	18/10/2055
चन्द्रमा	18/06/2056
मंगल	16/02/2057

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष

बृहस्पति	18/10/2057
सूर्य	16/02/2058
चन्द्रमा	18/06/2058

शुक्र दशा 3 वर्ष

मंगल	18/10/2058
शुक्र	18/10/2059
बुध	18/10/2060

मंगल दशा 6 वर्ष

मंगल	18/10/2061
शनि	18/10/2063
शुक्र	18/10/2065

बुध दशा 2 वर्ष

चन्द्रमा	18/10/2067
मंगल	18/06/2068
बृहस्पति	16/02/2069

शनि दशा 6 वर्ष

राहु	18/10/2069
मंगल	18/10/2071
शनि	18/10/2073

तृतीय चक्र

राहु दशा 6 वर्ष

मंगल	18/10/2075
केतु	18/10/2077
राहु	18/10/2079

केतु दशा 3 वर्ष

शनि	18/10/2081
राहु	18/10/2082
केतु	18/10/2083

बृहस्पति दशा 6 वर्ष

केतु	18/10/2084
बृहस्पति	18/10/2086
सूर्य	18/10/2088

सूर्य दशा 2 वर्ष

सूर्य	18/10/2090
चन्द्रमा	18/06/2091
मंगल	17/02/2092

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष

बृहस्पति	18/10/2092
सूर्य	16/02/2093
चन्द्रमा	18/06/2093

शुक्र दशा 3 वर्ष

मंगल	18/10/2093
शुक्र	18/10/2094
बुध	18/10/2095

मंगल दशा 6 वर्ष

मंगल	18/10/2096
शनि	18/10/2098
शुक्र	18/10/2100

बुध दशा 2 वर्ष

चन्द्रमा	18/10/2102
मंगल	18/06/2103
बृहस्पति	17/02/2104

शनि दशा 6 वर्ष

राहु	18/10/2104
मंगल	18/10/2106
शनि	18/10/2108

लाल किताब 35 वर्षीय चक्र | दशारम्भ का ग्रह : शनि | दशारम्भ दिनांक : 18:10:2005

प्रथम चक्र

शनि दशा 6 वर्ष

राहु	18/10/2005
मंगल	18/10/2007
शनि	18/10/2009

राहु दशा 6 वर्ष

मंगल	18/10/2011
केतु	18/10/2013
राहु	18/10/2015

केतु दशा 3 वर्ष

शनि	18/10/2017
राहु	18/10/2018
केतु	18/10/2019

बृहस्पति दशा 6 वर्ष

केतु	18/10/2020
बृहस्पति	18/10/2022
सूर्य	18/10/2024

सूर्य दशा 2 वर्ष

सूर्य	18/10/2026
चन्द्रमा	18/06/2027
मंगल	17/02/2028

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष

बृहस्पति	18/10/2028
सूर्य	16/02/2029
चन्द्रमा	18/06/2029

शुक्र दशा 3 वर्ष

मंगल	18/10/2029
शुक्र	18/10/2030
बुध	18/10/2031

मंगल दशा 6 वर्ष

मंगल	18/10/2032
शनि	18/10/2034
शुक्र	18/10/2036

बुध दशा 2 वर्ष

चन्द्रमा	18/10/2038
मंगल	18/06/2039
बृहस्पति	17/02/2040

द्वितीय चक्र

शनि दशा 6 वर्ष

राहु	18/10/2040
मंगल	18/10/2042
शनि	18/10/2044

राहु दशा 6 वर्ष

मंगल	18/10/2046
केतु	18/10/2048
राहु	18/10/2050

केतु दशा 3 वर्ष

शनि	18/10/2052
राहु	18/10/2053
केतु	18/10/2054

बृहस्पति दशा 6 वर्ष

केतु	18/10/2055
बृहस्पति	18/10/2057
सूर्य	18/10/2059

सूर्य दशा 2 वर्ष

सूर्य	18/10/2061
चन्द्रमा	18/06/2062
मंगल	16/02/2063

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष

बृहस्पति	18/10/2063
सूर्य	17/02/2064
चन्द्रमा	18/06/2064

शुक्र दशा 3 वर्ष

मंगल	18/10/2064
शुक्र	18/10/2065
बुध	18/10/2066

मंगल दशा 6 वर्ष

मंगल	18/10/2067
शनि	18/10/2069
शुक्र	18/10/2071

बुध दशा 2 वर्ष

चन्द्रमा	18/10/2073
मंगल	18/06/2074
बृहस्पति	16/02/2075

तृतीय चक्र

शनि दशा 6 वर्ष

राहु	18/10/2075
मंगल	18/10/2077
शनि	18/10/2079

राहु दशा 6 वर्ष

मंगल	18/10/2081
केतु	18/10/2083
राहु	18/10/2085

केतु दशा 3 वर्ष

शनि	18/10/2087
राहु	18/10/2088
केतु	18/10/2089

बृहस्पति दशा 6 वर्ष

केतु	18/10/2090
बृहस्पति	18/10/2092
सूर्य	18/10/2094

सूर्य दशा 2 वर्ष

सूर्य	18/10/2096
चन्द्रमा	18/06/2097
मंगल	16/02/2098

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष

बृहस्पति	18/10/2098
सूर्य	16/02/2099
चन्द्रमा	18/06/2099

शुक्र दशा 3 वर्ष

मंगल	18/10/2099
शुक्र	18/10/2100
बुध	18/10/2101

मंगल दशा 6 वर्ष

मंगल	18/10/2102
शनि	18/10/2104
शुक्र	18/10/2106

बुध दशा 2 वर्ष

चन्द्रमा	18/10/2108
मंगल	18/06/2109
बृहस्पति	16/02/2110

सामान्य भविष्यफल

आपका लग्न मेष है। आपको खाने में मीठी चीजें ज्यादा पसन्द होंगी। आप किसी काम को करने में नहीं झिझकेंगे अथवा शर्माना भी आपकी आदत नहीं होगी। आपमें आत्मविश्वास की कमी नहीं होगी एवं आप लंबे समय तक एक ही विषय पर अपनी रूचि को कायम नहीं रख पायेंगे।

आपकी गर्दन लम्बी होगी तथा चेहरा भरा हुआ होगा। आपका कद मंझोला होगा। आपके भौहों के बाल घने होंगे तथा चेहरे या सिर पर तिल, मस्सा या चोट का कोई निशान हो सकता है।

आपका लग्न मेष होने के कारण, आपकी जो भी अभिलाषा होगी, उसे पाने के लिए पूरा जोर लगा देंगे। लेकिन, जब अभिलाषा पूर्ण हो जाती है, तो आपको लग सकता है, कि उस वांछित वस्तु की आपको ज्यादा जरूरत नहीं थी। परन्तु, एक बात अवश्य है कि आप जो भी कार्य आरम्भ करते हैं, उसे पूरे जोश में करते हैं।

आप अपने किसी भी शौक को ज्यादा समय तक कायम नहीं रख पायेंगे। आप बहुत बेहतरीन मुक्केबाज, फुटबॉल के खिलाड़ी या वेट–लिटर हो सकते हैं। यदि आप किसी कार्य को आरम्भ करने से पहले अपने जोश या उत्साह को काबू में कर लेते हैं, तो आप अपने जीवन में बहुत आगे जा सकते हैं। आपको समय–समय पर योग्य मित्रों और संबंधियों से सलाह लेते रहना चाहिए।

आप पर समाज की कूटनीतियों का कोई असर नहीं होगा, जिसकी वजह से विषम परिस्थितियों में भी आप कोई समझौता नहीं करेंगे। आपके स्पष्टवादी होने के कारण लोग आपको बेबाक समझ सकते हैं। आप कल्पनाशील तथा आत्मविश्वासी होंगे। आप अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अन्त समय तक जूझने वाले होंगे। कभी–कभी आपको छोटी–छोटी बातों पर गुस्सा आ सकता है।

आपकी कुण्डली में प्रथम भाव में मंगल होने की वजह से आप पराक्रमी तथा अभिमानी होंगे। आप सांवलें हो सकते हैं तथा आप न्यायप्रिय व्यक्ति होंगे। आप कुछ हद तक मानसिक तनाव से गुजर सकते हैं और काफी बेचैनी महसूस करेंगे। आपकी शारीरिक संरचना हृष्ट–पुष्ठ होगी। यदि आपका साला आपके साथ रह रहा है, तो यह आपके भाई के लिए अशुभ हो सकता है। लेकिन यदि आप अपने हमउम्र व्यक्ति के साथ– जो आपका रिश्तेदार भी हो– काम कर रहे हैं, तो यह आपके लिए काफी लाभदायक होगा। आप अपने भाइयों का ख्याल रखने वाले होंगे।

आपकी कुण्डली के प्रथम भाव में मंगल होने की वजह से आपको बहुत भूख लगती होगी और थोड़ी–थोड़ी देर में कुछ ना कुछ खाने का मन करता होगा। आपकी पाचन शक्ति बहुत बढ़िया होगी। आप पाँच वर्ष की आयु तक किसी बीमारी या छोटी–मोटी चोटों की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। आठवें साल में भी इसी तरह की परेशानियों से ग्रसित हो सकते हैं। आप दीर्घायु होंगे।

आपकी कुण्डली में पहले भाव में मंगल के साथ चंद्रमा भी स्थित है, आपको काफी लाभदायक फल प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में बुध सातवें भाव में स्थित है, आप तीक्ष्ण बुद्धि के हो

सकते हैं और एक सफल व्यापारी बन सकते हैं।

सातवें भाव में स्थित सूर्य का विश्लेषण

आपकी लाल किताब कुण्डली में सूर्य सातवें भाव में स्थित है। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं तो आप क्रोधी होंगे। यह आपके लिये लाभदायक होगा। आप बहुत उत्साही और ऊर्जावान होंगे। अपने परिवार वालों के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके जन्म के पहले आपके परिवार की आर्थिक स्थिति खराब रही होगी, लेकिन आपके जन्म के बाद ठीक हो गई होगी। सौतेली माता या कोई अन्य महिला आपकी मदद करेगी। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ और चुस्त होंगे। आपकी संतान धनी होगी। आपमें एक अलग तरह का मर्दाना व्यक्तित्व होगा। आप बिना कोई प्रयास किये अपने पूर्वजों का धन प्राप्त करेंगे। अपने ससुराल वालों से आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आप धन की भारी बचत करेंगे। आपके विवाह के बाद आपका भाग्योदय होगा। विवाह के बाद आपका भाग्य चमकेगा। आप दो बार विवाह कर सकते हैं। आपका दामाद एक धनी और सम्मानित परिवार से होगा। साझेदारी में आपको लाभ प्राप्त होंगे। आपको धार्मिक कार्यों और ज्योतिश्श विद्या में रूचि हो सकती है। आपकी मृत्यु आपके घर होगी।

यदि आप अपने साझेदार से झगड़ा करेंगे, अपने ससुराल वालों के लिये समस्या पैदा करेंगे, झूठ में यकीन करेंगे, सरकारी कर सही रूप से अदा नहीं करेंगे तो आपका सूर्य कमजोर हो सकता है। यदि आपका सूर्य किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके जीवनसाथी बीमार हो सकती हैं। आप अपने पुत्र या परिवार के किसी बालक के कारण समस्या का सामना कर सकते हैं। वह पागल हो सकता है। आपके ससुराल वाले भी समस्या का सामना कर सकते हैं। यदि आप धोखेबाजी के किसी कार्य में सम्मिलित होते हैं या कुछ चुराते हैं तो आपकी आर्थिक स्थिति खराब हो सकती है। अधिक क्रोध, स्वार्थ या प्रशंसा आपकी बर्बादी का संकेत हो सकता है। आपको पैर से सम्बन्धित कोई समस्या हो सकती है। आपका अपने जीवनसाथी से झगड़ा या अलगाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1 – अपने व्यवसाय को करते समय आप क्रोध न करें।
2 – यदि आप सरकारी नौकरी में हैं तो अपने रवैया गर्म रखें।

उपाय

1 – काम पर जाते समय चीनी खाकर और पानी पी कर जायें।
2 – रात में रोटी पकाने के बाद दूध का छींटा मार कर चूल्हा बुझायें। उसी चूल्हे या स्टोव को सूर्योदय से पूर्व न जलायें।

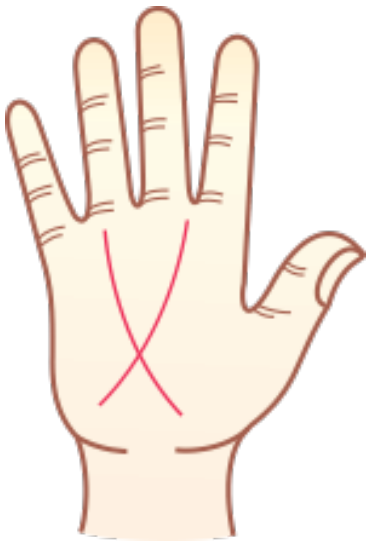

पहले भाव में स्थित चन्द्रमा का विश्लेषण

आपकी लाल किताब कुण्डली में चन्द्रमा पहले भाव में स्थित है। आपका जन्म काफी मिन्नतों के बाद हुआ होगा या आपका जन्म एक से अधिक बहनों के जन्म के बाद हुआ होगा। आपमें सबको आकर्शित करने की क्षमता होगी। आपको सफेद कपड़े पहनना पसन्द होगा। आपका स्वभाव शांत और विनम्र होगा। आप सुंदर होंगे। आप विद्वान होंगे और आपको कई भाश्शाओं का ज्ञान होगा। आपको पैतृक घर प्राप्त होगा। आप सम्पन्न होंगे और आपको जीवन में धन की कभी कमी नहीं होगी। यदि आपका विवाह 28 साल की आयु में होता है तो आप सारा जीवन सुखी रहेंगे। आपको किसी व्यक्ति की सम्पत्ति या धन प्राप्त होगा और इससे आप धनी हो जायेंगे। जब तक आपकी माता जीवित हैं, आपको धन की कमी नहीं होगी। आप दीर्घायु होंगे। आपको सरकार से सम्मान प्राप्त होगा। आपके जन्म के बाद आपके पिता की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आपके पिता को व्यापार, आर्थिक लाभ और जीवन से संबंधित शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। यदि आप 24 से 27 साल की आयु के बीच कोई यात्रा करते हैं तो यात्रा से वापस आने के बाद अपनी माता का आशीर्वाद लें। इससे आपकी माता दीर्घायु होंगी। आपको 24 साल की आयु से पहले अपना घर नहीं बनवाना चाहिये। आपकी वृद्धावस्था सुख से पूर्ण होगी।

यदि आप 24 साल से पहले अपना घर बनवाते हैं, 28 साल की आयु में विवाह करते हैं, अपनी आया से झगड़ा करते हैं या गाय को कश्ट देते हैं तो आपका चन्द्रमा कमजोर हो सकता है। यदि आपका चन्द्रमा किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप पानी में डूब सकते हैं। आपको मानसिक शांति नहीं मिल सकती है और आप चिन्तित रह सकते हैं। आपको मानसिक रोग हो सकता है। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता है। आपको दिल और ऑख से सम्बन्धित रोग हो सकते हैं। आपको पुत्र का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1 – अपनी माता या बूढ़ी औरतों से झगड़ा न करें।
2 – आपको नैतिक मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिये।

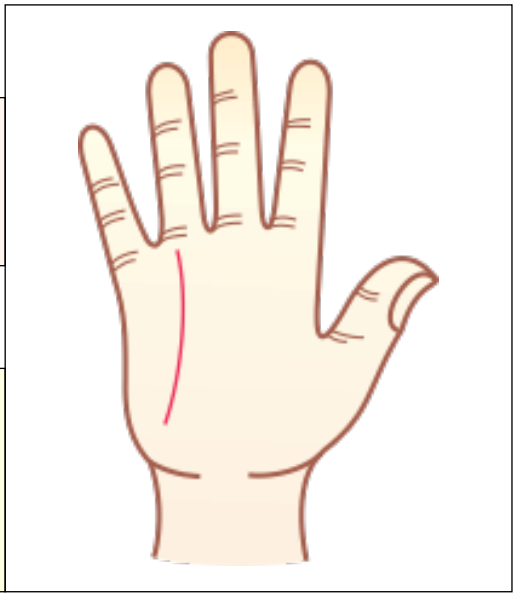

उपाय

1 – चांदी के गिलास में पानी या दूध पियें।
2 – पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ायें।

पहले भाव में स्थित मंगल का विश्लेषण

आपकी लाल किताब कुण्डली में मंगल पहले भाव में स्थित है। आप दोहरी प्रकृति के व्यक्ति नहीं होंगे और आप बाहर तथा अन्दर से एक तरह ही होंगे। आपकी प्रकृति और व्यवहार समान होंगे। आप बहादुर, उत्साही और प्रसन्नचित्त होंगे। आप विद्वान होंगे। आप अच्छे और बुरे सभी तरह के लोगों के साथ नेकी करेगें। आप साधु और गरीबों की मदद करेंगे। आपको छोटे भाई–बहनों तथा संतान का सुख प्राप्त होगा। आप अपने परिवार के लिये भाग्यशाली साबित होंगे और अपने परिवार को समृद्ध तथा खुशहाल बनायेंगे। 18 साल की आयु के बाद आप सरकारी नौकरी या परामर्श के कार्यों में रूचि लेंगे। शत्रु आपको हानि नहीं पहुँचा पायेंगे और आपकी उनसे रक्षा होगी। यदि आप नौकरी करते हैं तो आप वह कार्य 35 से 40 साल की आयु तक ही करेंगे। आपको राज्य सरकार से लाभ प्राप्त होगा। आप आक्रामक प्रकृति के होंगे और यदि कोई आप पर आक्रमण करता है तो आप उसका करारा जबाव देंगे। आप 28 साल की आयु के बाद प्रगति करेंगे। उच्च अधिकारियों से आपके अच्छे संबंध होंगे। लोहे, लकडी और घर से सम्बन्धित व्यवसाय आपके लिये लाभकारी होंगे। यदि आप अपने परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर काम करेंगे तो यह आपके लिये लाभदायक होगा। आप दूसरों के अच्छे काम को कभी नहीं भूलेंगे और उनका अहसान मानेंगे। आपका आशीर्वाद लोगों के लिये फलदायी होगा।

यदि आप दान लेंगे या कोई चीज बिना मोल दिये लेंगे, झूठ बोलेंगे, अपनी माता को कश्ट देंगे या उनका विरोध करेंगे, लोगों को गाली देंगे तो आपका मंगल कमजोर हो सकता है। यदि आपका मंगल किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपको शारीरिक कश्ट हो सकता है। आप अपने आलस के कारण बनते काम खराब कर सकते हैं। आपको मानसिक रोग हो सकता है या आप तनावग्रस्त रह सकते हैं। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। आपकी माता का आप्रेशन हो सकता है। आपके भाई को कश्ट हो सकता है और आपकी बहन खुश नहीं रह सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1 – दान न लें या कोई चीज बिना मोल दिये न लें।
2 – ार पर हाथी दॉत न रखें।

उपाय

1 – यदि आपके बड़े भाई जीवित हैं तो लाल रूमाल अपने पास रखें।
2 – अपने भाई और साले की सेवा करें।

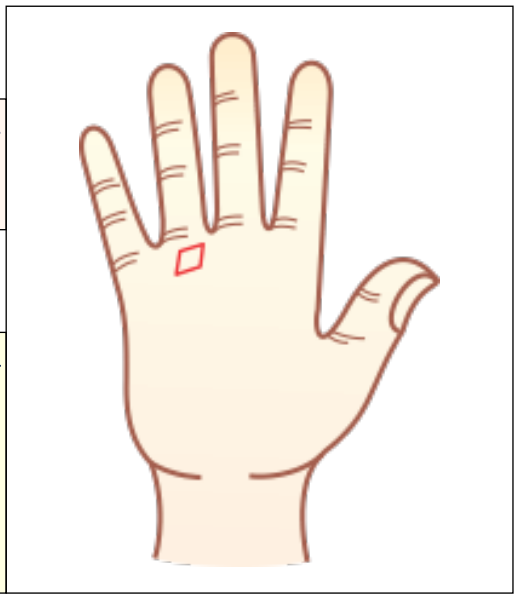

सातवें भाव में स्थित बुध का विश्लेषण

आपकी लाल किताब कुण्डली में बुध सातवें भाव में स्थित है। आप सुशील और उत्तम आचरण करने वाले होंगे। आप छपाई, चिकित्सा, दवा और तैयार वस्तुओं के व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त करेंगे। आपको अपने व्यवसाय या व्यापार में कोई समस्या नहीं होगी। आप 34 साल की आयु तक अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे। आप विदेश यात्रा करेंगे। आपकी पत्नी धनी और प्रभावशाली परिवार से होंगी। आप एक अच्छे लेखक होंगे। आपको मुकदमों में सफलता प्राप्त होगी। आप अपने मित्रों और प्रियजनों की सहायता करेंगे। यदि आप शिल्पकारी, लकड़ी या मशीनरी से संबंधित कोई काम करेंगे तो आपको अधिक लाभ प्राप्त होगा। आप एक व्यवस्थित जीवन व्यतीत करेंगे। आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा हो सकता है। आपकी पत्नी एक उच्च परिवार से होंगी।

यदि आपने साहूकार का काम किया, अपनी पत्नी के साथ झगड़ा किया, अपने भाई या साले के साथ साझेदारी की, गलत व्यवहार किया तो आपका बुध कमजोर हो सकता है। यदि आपका बुध किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपका अपनी साली के साथ संबंध हो सकता है। इस कारण से आपका जीवन बर्बाद हो सकता है। आपके विवाह में समस्या आ सकती है। आपको अपने जीवनसाथी से अलग होना पड़ सकता है या आपका तलाक हो सकता है। यदि आपके विवाह में देरी हो रही है तो 34 साल की आयु तक आपका विवाह हो जायेगा। आपके भाई और संबंधी आपका विरोध कर सकते हैं। आप बहुत बुद्धिमान नहीं हो सकते हैं और आप देर से परिपक्व होंगे। आप अपने परिवार के बिखराव का कारण बन सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1 – सींग रहित गाय या बकरी न पालें।
2 – हरी घास न लगायें।

उपाय

1 – हीरा धारण करें। यदि सम्भव न हो तो पन्ना पहनें।
2 – चीनी और पानी पीने के बाद कोई काम शुरू करें।

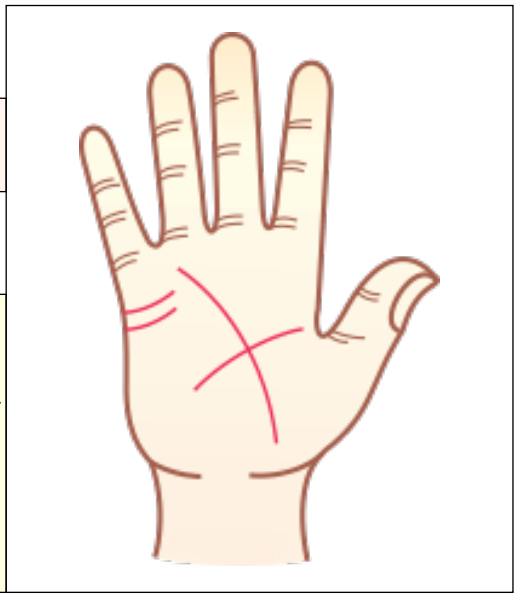

सातवें भाव में स्थित बृहस्पति का विश्लेषण

आपकी लाल किताब कुण्डली में बृहस्पति सातवें भाव में स्थित है। आपका विवाह देर से हो सकता है। आपके पुत्र के जन्म के बाद आपकी सारी समस्यायें समाप्त हो जायेंगी। आपकी पत्नी नौकरी करेगी और आपका धन उसकी आय के द्वारा बढ़ेगा। आपका वैवाहिक जीवन खुशियों से भरा होगा। आप अपने पिता से अलग हो जायेंगे और साझेदारी में व्यापार करेंगे। आप स्वस्थ रहेंगे। आप 40 साल की आयु तक एक विलास पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। जो कुछ भी आपको अपनी ससुराल से मिलेगा, वह बढ़ेगा। आपकी धार्मिक कार्यों में रूचि होगी। आप ज्योतिश्श में निपुण होंगे और इसके द्वारा धन कमायेंगे। आपको व्यापार या दलाली संबंधित कार्यों में लाभ प्राप्त होगा। आप लोहे, मशीनरी, काली चीजों, भवन निर्माण की सामग्री, ईटों, पत्थर, सीमेन्ट, लकड़ी आदि से संबंधित व्यवसाय में प्रगति करेंगे। आपको अपने पिता और ससुराल वालों से लाभ प्राप्त होगा। आपके संबंधी आपके धन का प्रयोग कर सकते हैं और आपको जीवन में सुख प्राप्त नहीं हो सकता है।

यदि आपके घर पर बने मन्दिर में मूर्ति हुई, घर पर चांदी या अन्य धातुओं के सिक्के, पढ़ी न जाने वाली धार्मिक पुस्तकें हुयी तो आपका बृहस्पति कमजोर हो सकता है। यदि आपका बृहस्पति किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप अपने भाई के कारण दुःखी हो सकते हैं। आपकी आमदनी होने के बावजूद आप पर कर्ज का बोझ हो सकता है। आप जीवन के उतार–चढ़ावों का सामना करेंगे। बुरी संगति के कारण आप चोर या डाकू बन सकते हैं। अपनी पत्नी के अलाव किसी अन्य स्त्री के कारण आपको हानि हो सकती है। आपको पिता का बहुत सुख नहीं मिल सकता है। घुमक्कड़ साधुओं की संगति के कारण आपका भाग्य मंदा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1 – घुमक्कड़ साधुओं से दूर रहें।
2 – घर पर तुलसी, घंटी न रखें।

उपाय

1 – सोने और रत्नों को पीले कपड़े में बाँधकर अपने पास रखें।
2 – यदि आपके ससुराल वाले आपको कुछ देते रहेंगे तो दोनों परिवारों को लाभ होगा।

आठवे भाव में स्थित शुक का विश्लेषण

आपकी लाल किताब कुण्डली में शुक्र आठवें भाव में स्थित है। आपकी आय उत्तम होगी। आपको झगड़ों या विवादों में हार का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपको अपनी संतान के स्वास्थ्य के बारे में सावधान रहना चाहिये। आप परिश्रमी होंगे और मेहनत करने से कभी नहीं डरेंगे। लेकिन आपका आलस्य आपको निकम्मा बना सकता है। आपको जीवनसाथी और संतान का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आपको अपने जन्मस्थान से दूर रहना पड़ सकता है। आपको पानी संबंधित कामों, समुद्री यात्रा, विदेशी महिलाओं से सजग रहना चाहिये। आपकी पत्नी जो कुछ भी कहेगी, वह सच हो जायेगा और नहीं बदलेगा। अतः आपको उन्हें परेशान या सताना नहीं चाहिये।

यदि आपका चरित्र खराब हुआ, आपने अपने ससुराल वालों के साथ धोखा किया, सींग रहित गाय पाली तो आपका शुक्र कमजोर हो सकता है। यदि आपका शुक्र किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप कर्ज के बोझ के नीचे दब सकते हैं। आप अधिकतर समय बीमार रह सकते हैं। आपकी पत्नी चिड़चिड़ी स्वभाव वाली हो सकती हैं। किसी भी व्यक्ति के लिये आर्थिक जमानत न दे, अन्यथा आपको उसका भुगतान करना पड़ सकता है। इससे आपका भाग्य प्रभावित हो सकता है। आपको 25 साल की आयु के बाद विवाह करना चाहिये, अन्यथा आपको पत्नी का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप बदनाम भी हो सकते हैं। अपने आलस्य, मांस–मदिरा का सेवन करने की आदत या पराई औरतों के साथ अनैतिक संबंध रखने के कारण आपको गुप्तांगों का कोई रोग हो सकता है। इसके कारण आपके कार्य में बाधा पहुँच सकती है। आप जीवन में कोई ऐसा काम कर सकते हैं, जिसके कारण आपको पछताना पड़ सकता है। यदि आपने अपनी पत्नी के साथ झगड़ा किया तो आपको हानि और हार का सामना करना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1 – भीख और दान न मांगें।
2 – अपने ससुराल वालों को धोखा न दें।

उपाय

1 – नाली में तांबे का सिक्का या फूल डालें।
2 – धार्मिक स्थान पर सिर झुकायें।

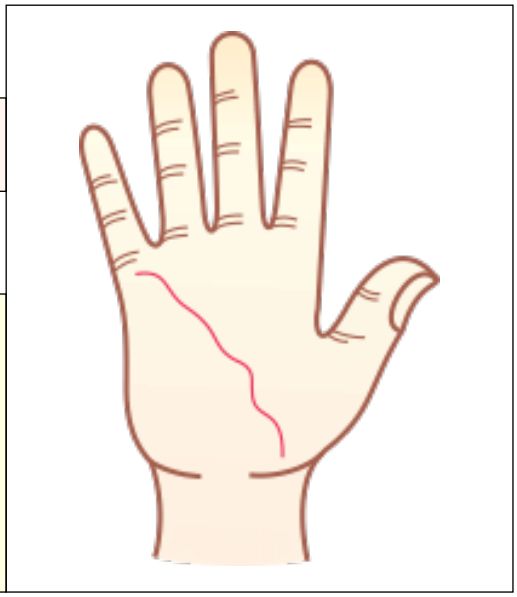

चौथे भाव में स्थित शनि का विश्लेषण

आपकी लाल किताब कुण्डली में शनि चौथे भाव में स्थित है। आप एक सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। आप विपरीत लिंग के लोगों से घिरे रहेंगे और आपके कई प्रेम प्रसंग होंगे। लेकिन आपको काम से घृणा हो जायेगी और आप धार्मिक व्यक्ति बन जायेंगे। जब आप बीमार होंगे तो शराब आपके लिये दवा साबित होगी। आप अपने संबंधियों की सेवा करेंगे। आपको माता–पिता में से किसी एक का सुख लम्बे समय तक मिलेगा। आप दूसरी महिलाओं में रूचि लेंगे, जो आपकी पत्नी के लिये हानिकारक होगा। अपने घर से दूर शिक्षा ग्रहण करना आपके लिये अधिक लाभकारी होगा।

यदि आप किराये के मकान में रहेंगे, सांप का तेल या नशीले पदार्थ बेचेंगे तो आपका शनि कमजोर हो सकता है। यदि आपका शनि किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप क्रोधी और चालाक होंगे। आपको घर/सम्पत्ति का बहुत सुख प्राप्त नहीं होगा। आप बीमार होते हैं तो आपको शनि की वस्तुयें प्रयोग करनी चाहिये। आपकी माता दुःखी रह सकती हैं या उनको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यदि किसी विधवा स्त्री के साथ आपके अंतरंग संबंध हुये या उसके लिये धन खर्च किया, तो आपको धन हानि हो सकती है। आपको उदर संबंधित कोई रोग हो सकता है। दूसरे लोग आपकी सम्पत्ति पर कब्जा कर सकते हैं और आप पर कलंक लग सकता है। यदि आप नशीले पदार्थों का सेवन करेंगे तो आपको अशुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आपकी पत्नी आपके कारण दुःखी हो सकती हैं या आपको अपनी पत्नी का बहुत सुख नहीं मिल सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1 – हरा रंग आपके लिये हानिकारक है।
2 – काले रंग के कपड़े न पहनें।

उपाय

1 – कुयें में दूध डालें।
2 – अपने भोजन का कुछ भाग मछली, भैंस और गाय को दें।

बारहवें भाव में स्थित राहु का विश्लेषण

आपकी लाल किताब कुण्डली में राहु बारहवें भाव में स्थित है। आपको जीवन में सभी सुख प्राप्त होंगे। आप एक साधु की तरह व्यवहार करेंगे। आपको उच्च शिक्षा प्राप्त होगी और आप जीवन में स्वयं प्रगति करेंगे। आपको परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा और आप चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे। आप धनी होंगे और एक सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। आप अपने भाई–बहनों से प्रेम करेंगे और अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे। आपकी पुत्री आपके लिये भाग्यशाली साबित होगी और आपको धन तथा सुख प्राप्त होंगे। आप शुभ अवसरों पर अधिक धन व्यय करेंगे, खासकर अपनी बहन और भाई के विवाह के अवसर पर। यदि आप पर कर्ज का बोझ आता है तो आप उसका भुगतान तुरन्त कर देंगे। आप शुभ समय के दौरान कोई उपलब्धि प्राप्त करेंगे। आपकी पत्नी धनी परिवार से होंगी।

यदि आपके पुत्रियों की संख्या अधिक हुई, आपके घर में अधिक प्रकाश हुआ, आपने अपनी तारीफ की, बिना परिणाम सोचे कोई कार्य किया तो आपका राहु कमजोर हो सकता है। यदि आपका राहु किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो नशे की लत या गलत मित्रों की संगति के कारण दुःखी रह सकते हैं। आपको आंत या पसली से संबंधित कोई रोग हो सकता है। आपको बवासीर भी हो सकता है। आप मानसिक अशान्ति के कारण गहरी नींद में नहीं सो सकते हैं। आप दिन में भी सपने देखने वाले हो सकते हैं और अपना समय बर्बाद कर सकते हैं। आप किसी प्रकार के मुकदमे में फंस सकते हैं। आपके परिवार की जिम्मेदारी आपके कंधों पर आ सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1 – रसोई के बाहर खाना न बनायें।
2 – आंगन में धुंआ न करें।

उपाय

1 – अपने घर के अन्त में अंधेरा कमरा बनवायें।
2 – अपने घर पर चांदी का ठोस हाथी न रखें या सफेद कपड़े में चांदी का चौरस टुकड़ा बांध कर गले में पहनें।

छठे भाव में स्थित केतु का विश्लेषण

आपकी लाल किताब कुण्डली में केतु छठे भाव में स्थित है। आप अभिमानरहित होंगे। आप एक अच्छे सलाहकार होंगे। आपकी संतान आपकी मदद करेगी। आप धनी होंगे और अपने ननिहाल के लिये भाग्यशाली होंगे। आप अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे। आपका पुत्र आपकी परेशानी को दूर करेगा और आपका सहयोग करेगा। आप अपने जीवन में सुख प्राप्त करेंगे। आप जहाँ भी रहेंगे, आपका जीवन खुशहाल होगा।

यदि आप अपने ससुराल वालों से अपने विवाह के समय सोने की अंगूठी या दो चारपाई नहीं लेंगे, आपको ससुराल से मिली सोने की अंगूठी खो जाती है या आप उसे बेच देते हैं तो आपका केतु कमजोर हो सकता है। यदि आपका केतु किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपकी माता और ससुराल वालों को अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। आपको कुत्ते से भय हो सकता है। आप बुढ़ापे में परेशानी का सामना कर सकते हैं। आपके फालतू के व्यय बढ़ सकते हैं। कभी–कभी आप आवारा घूम सकते हैं। आपका पुत्र दूसरों के लिये भाग्यशाली नहीं हो सकता है। आपको पुत्रियाँ अधिक हो सकती हैं। आपको पेट, त्वचा या पैर का रोग हो सकता है। आपकी माता और मामा को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपके शत्रुओं की संख्या बिना किसी कारण के बढ़ सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1 – आप अपने ससुराल वालों से प्राप्त सोने की अंगूठी को न तो बेचें और न ही खोने दें।
2 – परिवार की लड़कियों से झगड़ा न करें।

उपाय

1 – अपने मस्तक पर केसर या हल्दी का तिलक लगायें।

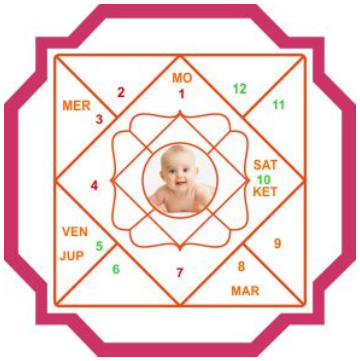

नाबालिक कुण्डली (टेवा)

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली के पहले, चौथे, सातवें और दसवें भाव (केन्द्र स्थान) में कोई भी ग्रह नहीं बैठा हुआ है या उनमें केवल बुध बैठा हुआ है अथवा केवल पापी ग्रह शनि, राहु, केतु स्थित हैं, तो ऐसी कुण्डली, नाबालिक टेवा (कुण्डली) कहलाती है। इस स्थिति में जातक की किस्मत बारह साल तक शक के दायरे में होती है।

लाल किताब के अनुसार, नाबालिक टेवा वाले जातक पर बारह वर्षों तक प्रत्येक वर्ष एक––एक ग्रह का प्रभाव अग्रलिखित रूप में पड़ेगा। जीवन पर पड़ने वाले दुषित प्रभाव की अनुकूलता हेतु निम्नांकित भाव स्थित ग्रह का उपाय करना चाहिए।

1– उम्र के पहले साल में सातवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
2– उम्र के दूसरे साल में चौथे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
3– उम्र के तीसरे साल में नौवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
4– उम्र के चौथे साल में दसवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
5– उम्र के पांचवें साल में ग्यारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
6– उम्र के छठें साल में तीसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
7– उम्र के सातवें साल में दूसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
8– उम्र के आठवें साल में पांचवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
9– उम्र के नौवें साल में छठे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
10– उम्र के दसवें साल में बारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
11– उम्र के ग्यारहवें साल में पहले भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
12– उम्र के बारहवें साल में आठवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।

निष्कर्ष –– यह कुण्डली (टेवा) नाबालिक टेवा नहीं है।

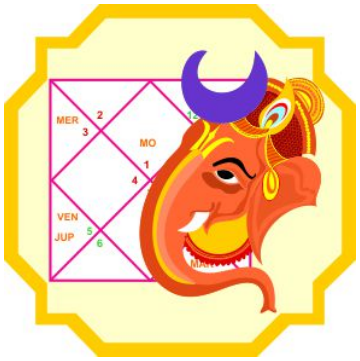

धर्मी कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली में राहु या केतु 4थे भाव में या चन्द्रमा के साथ अथवा शनि 11वें भाव में या बृहस्पति के साथ बैठा हुआ है, तो ऐसी कुण्डली को धर्मी कुण्डली (टेवा) कहते हैं। ऐसे जातक के जीवन में कभी भी कोई बड़ी समस्या नही आ सकती है, जो कि जीवन में उथल-पुथल मचा दे। किसी बहुत मुश्किल या कष्ट के समय उसे कहीं न कहीं से दैवीय सहायता प्राप्त हो जाएगी।

निष्कर्ष -- यह कुण्डली धर्मी कुण्डली (टेवा) नहीं है।

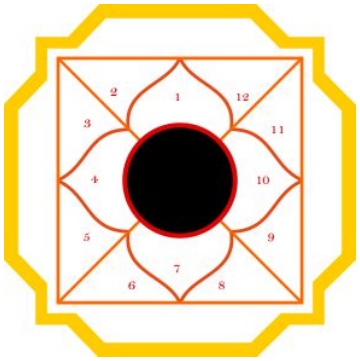

अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी कुण्डली के दसवें भाव में दो आपस में शत्रु ग्रह में बैठ जायें या कोई नीच ग्रह बैठा हो अथवा कोई ग्रह शत्रु ग्रह की पूर्ण दृष्टि में हो, तो ऐसी कुण्डली को अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) कहते हैं। कुण्डली में दसवां भाव जातक का कर्म स्थान है, इस घर का जातक की कमाई से संबद्ध है, इसलिए ऐसे भाव में दो या दो से अधिक परस्पर शत्रुता वाले ग्रह बैठ जायें (युति या दृष्टि से) या नीच का ग्रह हो तो, जातक के कर्मक्षेत्र में असंतुलन की स्तिथि पैदा हो जाती है। जातक की नौकरी या व्यापार में स्थिरता नहीं आ पाती है। दसवें भाव में बैठे अंधे हो चुके ग्रहों को ठीक करने के लिए दस अंधों को भोजन कराना चाहिए।

निष्कर्ष –– आपकी कुण्डली अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

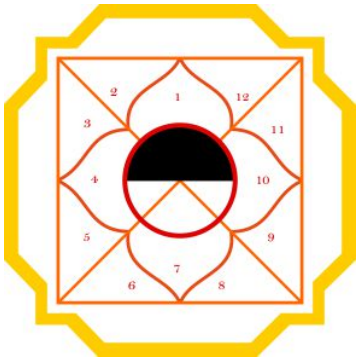

आधे अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि चौथे भाव में सूर्य और सातवें भाव में शनि स्थित हों तो ऐसी कुण्डली को आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली कहते हैं। इस ग्रह की स्थिति का जातक की मानसिक स्थिति और व्यवसायिक जीवन पर अशुभ असर होगा। जातक की मानसिक शांति में काफी कमी आ सकती है। चौथा भाव हमारे सुख का भी घर है, इस ग्रह स्थिति के कारण गृहस्थ सुख में कमी आने की संभावना होती है।

निष्कर्ष – आपकी कुण्डली आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

मांगलिक दोष्ष और उसका उपाय

लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली में मंगल पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति के अनुसार आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष लागू हो रहा है।

इस स्थिति में मंगल की पूर्ण दृष्टि सुख और आनन्द के भाव सातवें पर पड़ रही है। आप भौतिक सुख–सुविधाओं की तरफ ज्यादा आकर्षित हो सकते हैं और दाम्पत्य जीवन में इस वजह से कलह होती रहेगी। आपको समाज में सम्मानित नजरों से नहीं देखा जा सकता है। आपको गलत निर्णय नहीं लेना चाहिए। आप बहुत उत्तेजना वाले व्यक्ति होंगे, परन्तु आपकी पत्नी उतनी ही शांत होंगी। इस वजह से भी आपके दाम्पत्य जीवन पर बुरा असर पड़ सकता है।

1. हनुमान चालीसा का पाठ करें।
2. हनुमान जी को प्रसाद चढ़ायें।
3. हनुमान जी को सिंदूर का चोला चढ़ायें।
4. गायत्री का पाठ करें।
5. दुर्गा का पाठ करें।
6. रामचरित मानस के सुन्दर काण्ड का पाठ करें।
7. लाल रूमाल पास में रखें।
8. चाँदी का छल्ला (बिना जोड़ का) पहनें।
9. तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
10. चाँदी के कड़े में तांबा जड़वा कर पहनें।
11. चाँदी की चूड़ी पर लाल रंग करवा कर जीवनसाथी को पहनायें।
12. बन्दर पालें, या बन्दरों को भोजन दें।
13. तन्दूर पर मीठी रोटी लगवा कर कुत्तों को दें।
14. मंदिर में मीठा भोजन बांटें।
15. चीनी बहते पानी में प्रवाहित करें।
16. शहद या सिन्दूर बहते पानी में प्रवाहित करें।
17. मिट्टी की दीवार बनवाकर बार–बार गिरायें।
18. घर में नौकर रखें।

लाल रूमाल पास में रखें।

तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।

बन्दर पालें, या बन्दरों को भोजन दें।

तन्दूर पर मीठी रोटी लगवा कर कुत्तों को दें।

कालसर्प योग/दोष

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव

(1) किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना। (2) मानसिक तनाव। (3) आत्मविश्वास में कमी। (4) स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां। (5) गरीबी और धन की कमी। (6) व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी। (7) उत्तेजना और बेकार की चिंताएं। (8) मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव। (9) मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात। (10) मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।

पितृ ऋण

कुण्डली में राहु दूसरे, पाँचवें, नवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह कुण्डली में पितृ ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए।

ऋण – कारण और लक्षण

1– यदि कुल पुरोहित बदलने की आवश्यकता होती है।

2– यदि घर के आस–पास का कोई धार्मिक स्थल नष्ट कर दिया गया हो।

3– घर के आस–पास में कोई पीपल या बरगद का पेड़ नष्ट कर दिया गया हो।

प्रभाव

लाल किताब के अनुसार, आपके बाल में जब सफेदी आने लगती है, तो घर की धन–संपत्ति अपने आप नष्ट होनी शुरू हो जाती है तथा सिर पर चोटी के स्थान से बाल गायब हो जाते हैं और गले में माला या कंठी पहनना शुरू कर सकते हैं। आपके बारे में गलत अफवाहें उड़नी शुरू हो जाती है। आपको बिना गलती के ही जेल जाना पड़ सकता है।

उपाय

1– आप अपने परिवार के सारे सदस्यों से बराबर–बराबर पैसा इकट्ठा करें और किसी धार्मिक स्थान में दान करें।

2– अपने घर के आस–पास के किसी धार्मिक स्थल पर जाकर वहां की साफ–सफाई करें।

3– घर के आस–पास कोई पीपल या बरगद का पेड़ हो तो उसकी सेवा तथा देख–भाल करें और उसमें पानी डालें।

स्त्री ऋण

कुण्डली में सुर्य दूसरे या सातवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह कुण्डली में स्त्री ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए।

ऋण – कारण और लक्षण

1– आपके घर में किसी गर्भवती स्त्री के साथ गर्भावस्था के दौरान बुरा व्यवहार किया गया हो अथवा आपके पारिवारिक सदस्य आपस में हमेशा लड़ाई–झगड़ा करते रहे हों।

2– आपके घर में कोई भी व्यक्ति जानवरों पर दया ना करता हो, विशेषतः गाय पर या किसी खुशी के मौके पर दुखद घटना घट जाये।

प्रभाव

आपके परिवार में किसी खुशी के मौके पर किसी की मृत्यु हो जाती है, तो यह शुक्र खराब होने की सबसे बड़ी निशानी है।

उपाय

1– आपको अपने परिवार के सारे सदस्यों से बारबर मात्रा में धन लेकर उसका हरा चारा खरीदकर कम से कम 100 गायों को खिलाना चाहिए।

2– आपको अपना पहनावा बढ़िया रखना चाहिए, फटे–पुराने कपड़े न पहनें।

ग्रहफल और उपाय – लाल किताब

सातवें भाव में स्थित बृहस्पति का फल

सातवें घर में बृहस्पति को गृहस्थ में फंसा हुआ साधु कहा गया है। इस घर में बैठा हुआ बृहस्पति आपके लिए आमतौर पर बहुत अधिक शुभ फलदायक नहीं हो सकता है।

लाल किताब के अनुसार, आपको घर में मंदिर नहीं बनवाना चाहिए, अन्यथा संतान पर बुरा प्रभाव होगा।

लाल किताब के अनुसार, ससुराल से मिला हुआ दहेज काफी शुभ फल प्रदान करेगा। आपको धार्मिक क्रिया–कलापों में रूचि लेते रहना चाहिए।

साधु–सन्यासियों से आपको दूर रहना चाहिए।

आपकी कुण्डली में पहला या दूसरा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, आप बहुत धनी भी हों, तो भी आपको अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में मंगल अशुभ है। लाल किताब के अनुसार, अत्यधिक शिक्षा बुढ़ापे में कष्ट पहुंचा सकती है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और सूर्य एक साथ सातवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, दोनों ग्रह अपना–अपना फल प्रदान करेंगे।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और बुध एक साथ सातवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपके जन्म से ही आपके घर में धन, दौलत के लिए अशुभ स्थिति शुरू हो सकती है। आपके जीवन में भी बहुत उतार–चढ़ाव होगा।

सातवें भाव में स्थित बृहस्पति के उपाय और सावधानियाँ

1. शिवजी की पूजा करें।
2. मेढकों को ना मारें।
3. घर की चाहरदीवारी के अन्दर मंदिर का निर्माण न करायें।
4. पीले कपड़े में सोना बांधकर अपने पास रखें।
5. साधु–सन्यासियों से दूर रहें।
6. धर्म का प्रचार न करें।
7. पीपल के पेड़ में जल चढ़ायें।

सातवें भाव में स्थित सूर्य का फल

लाल किताब के अनुसार, सामान्यतः सातवें भाव में बैठा हुआ सूर्य शुभ फल प्रदान करता है। आपकी पारिवारिक स्थिति ठीक होगी और पुत्र के जन्म के बाद आर्थिक स्थिति और सुदृढ़ हो जायेगी। आप मुसीबत में भी अपनी हिम्मत नहीं खोयेंगे और दान–पुण्य के कार्य में रूचि लेंगे। हालांकि, आपके ससुराल की स्थिति अधिक सुखी नहीं हो सकती है।

आपको बहुत अधिक गुस्सा नहीं करना चाहिए, अन्यथा आपके परिवार पर इसका अशुभ प्रभाव पड़ेगा। अधिक नमक खाना भी अहितकर होगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य और बुध एक साथ सातवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपके जीवनसाथी बड़े खानदान से होंगी और उनका स्वभाव भी उत्तम होगा।

सातवें भाव में स्थित सूर्य के उपाय और सावधानियाँ

1. जमीन में ताँबे के चौकोर पत्तर गाड़ें।
2. काली भुण्डी गाय की सेवा करें।
3. कोई भी शुभ कार्य करने से पहले एक घूंट पानी पीयें।
4. नमक का सेवन कम करें।
5. खाना खाने से पहले अपने भोजन का एक छोटा हिस्सा आग में डालें।
6. रात में अपने घर का चूल्हा दूध से बुझायें।
7. रविवार का व्रत रखें।
8. हरिवंश–पुराण का पाठ सुनें।
9. अपना चरित्र ठीक रखें।
10. चारपाई के पायों में ताँबे की कील गाड़ें।

पहले भाव में स्थित चन्द्रमा का फल

आपकी कुण्डली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। आपकी माता जब तक जीवित हैं, तब तक आपको धन की कोई नहीं होगी। आप दीर्घायु होंगे, एवं आपको व्यवसाय नौकरी आदि में कभी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आप अपनी मर्जी से अपने किसी रिश्तेदारी में 28 वर्ष या 28 वर्ष से पहले विवाह करते हैं, तो आपकी होने वाली संतान पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ सकता है। यदि आपको 24 वर्ष या 24 वर्ष से पहले कोई संतान होती है, अथवा आप अपने पैसे से मकान बनवाते हैं, तो आपकी संतान पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

यदि आप 24वें वर्ष में विवाह करते हैं, तो यह चंद्रमा के शुभ प्रभाव को पूरी तरह से नष्ट कर देता है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति से बचने के लिए आपको चाँदी के गिलास में दूध पीना चाहिए। आपको ये भी ध्यान रखना चाहिए, कि उस गिलास मे कोई गर्दन या टोटी ना हो, अन्यथा आपके माता के स्वास्थ्य पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

यदि आप 100 दिन से अधिक की यात्रा पर जा रहे हैं, तो आपको किसी नदी में या समुद्र में तांबे का सिक्का फेंकना चाहिए।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। आपको चंद्रमा से संबंधित वस्तुओं जैसे चाँदी के बर्तन, और दूध का व्यापार करने से बचना चाहिए। यदि आप ऐसा करते हैं, तो यह चंद्रमा की शुभता को पूरी तरह से नष्ट कर देगा और आपके ऊपर भी इसका बहुत ही बुरा प्रभाव हो सकता है। इसी तरह से आपको दूध दान करने से बचना चाहिए।

यदि आपको रात में नींद नहीं आती है या आपको चैन नहीं मिलता है, तो

आपको अपने बिस्तर के चारों पावों के नीचे तांबे के नाखून दबाने चाहिए। इसके अलावा, आपको किसी बरगद के पेड़ में पानी देना चाहिए। यदि आप अपनी माता की सेवा करते हैं और उनका आशीर्वाद लेते हैं, तो यह आपकी उम्र के लिए बहुत ही लाभप्रद है। इससे आपके व्यापार और नौकरी पर भी शुभ प्रभाव होगा। यदि आप अपनी माता से चाँदी अथवा चावल का दान लेते हैं, तो यह आपका भाग्योदय करने में सहायक होगा। आपकी माता की मृत्यु के बाद आपका भाग्योदय होने की संभावना कम ही है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। आप जब भी किसी यात्रा पर जायें, लौटते समय अपनी माता के चरण को स्पर्श अवश्य करें। यह आपकी माता के उम्र के लिए लाभप्रद है। यदि आप अपनी माता के स्वास्थ्य को लेकर चिन्तित हैं, तो आपको लाल रंग के पत्थर का गुटका या गुड़ को जमीन में दबाना चाहिए।

यदि आप अपने किसी रिश्तेदार के साथ साझे में व्यापार करते हैं, तो आपको बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

यदि आप किसी व्यक्ति से बिना पैसे दिये कोई वस्तु लेते हैं, तो यह चंद्रमा की शुभता को कम करता है और इसका बुरा प्रभाव आपके जीवनसाथी पर पड़ सकता है। इस स्थिति से बचने के लिए आपको बूढ़ी स्त्रियों का आशीर्वाद लेना चाहिए।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा के मित्र बृहस्पति, मंगल या सूर्य पहले भाव अथवा दसवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपकी समुद्री या हवाई यात्रायें बहुत ही लाभदायक होंगी और आपकी आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा के मित्र ग्रह सातवें या आठवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपमें मिट्टी से सोना बनाने की कला होगी।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा शुभ है। लाल किताब के अनुसार, आपको बड़ी मात्रा में पैतृक संपत्ति प्राप्त होगी। कभी-कभी दूसरे व्यक्ति भी अपना कीमती सामान आपके पास रखकर जायेंगे, जो कि बाद में आपका हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में बुध सातवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपका दिमाग सही तरीके से काम नहीं कर सकता है। फिर भी धन-संपत्ति के मामले में इसका कोई बुरा असर नहीं होगा। आप सरकारी यात्राओं से अधिक धन प्राप्त कर सकते हैं।

पहले भाव में स्थित चन्द्रमा के उपाय और सावधानियाँ

1. अपने पास लाल रूमाल रखें।
2. चारपाई के पायों में ताँबे की कील गाड़ें।
3. बरगद के पेड़ की जड़ में पानी दें।
4. यदि आप पुत्र के साथ यात्रा कर रहे हैं, तो नदी इत्यादि में ताँबे का पैसा डालें।
5. घर में यदि कुआं है, तो उस पर छत न डलवायें।
6. अपनी उम्र के 24 से 27 वर्ष के बीच विवाह न करें और अपने पैसे से मकान भी न बनवायें।
7. हरे रंग और साली से बचें।
8. अपने घर में चाँदी के ऐसे बर्तन जिसमें टोंटी लगे हों, न रखें।

9. अपने घर में चाँदी की थाली रखें।
10. पानी अथवा दूध पीने के लिए चाँदी के बर्तन का इस्तेमाल करें।
11. शीशे के बर्तनों का प्रयोग न करें।
12. अपनी माता का आशीर्वाद लें और उनके द्वारा दिये हुए चावल और चाँदी का दान अपने पास रखें।

आठवें भाव में स्थित शुक्र का फल

सामान्यतः आठवें भाव में बैठा हुआ शुक्र बहुत अधिक शुभ फल नहीं प्रदान करता है। आपकी पत्नी बहुत सुस्त स्वभाव की हो सकती हैं। उनके जुबान से निकला हुआ शब्द पत्थर की लकीर होगा। आपको अपने जीवनसाथी को तंग नहीं करना चाहिए। यहां स्थित शुक्र के फल को शुभ करने के लिए आपको किसी से भी मुत में कोई सामान नहीं लेना चाहिए और धार्मिक स्थान पर हमेशा सिर झुकाना चाहिए।

यदि आपका विवाह 25 वर्ष से पहले हो जाये तो यह आपके लिए शुभ फलदायक होगा। यदि शुक्र का बुरा प्रभाव आपकी गृहस्थी पर पड़ रहा है, तो आपको अपनी माता, भाई और बहन का आशीर्वाद लेते रहना चाहिए।

आपके जीवन में प्रसन्नता कम हो सकती है। आप जीवन में हमेशा असंतुष्ट रह सकते हैं।

आपकी कुण्डली का दूसरा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, शुक्र आपको किसी भी लड़ाई–झगड़े में मदद करेगा, परन्तु आपके परिवार में बुजुर्गों की हालत ठीक नहीं हो सकती है। आपके ससुराल की भी हालत अधिक बढ़िया नहीं हो सकती है।

आठवें भाव में स्थित शुक्र के उपाय और सावधानियाँ

1. शुक्रवार के दिन 8 किलो गाजर किसी धार्मिक स्थान में दान करें।
2. 43 दिन तक काली गाय को ज्वार खिलाते रहें।
3. किसी की जमानत न दें।
4. 43 दिन तक एक फूल गंदे नाले में बहाते रहें।
5. प्रत्येक शुक्रवार गाय को रोटी दें।
6. चाँदी में मोती पहनें।
7. यदि आपकी पत्नी को कष्ट है, तो तिल या चावल चिड़ियों को खिलायें या दान करें।
8. स्त्री के वजन के बराबर ज्वार जमीन में दबायें।
9. मुत में किसी से कुछ न लें।
10. धार्मिक स्थान पर सिर झुकायें।
11. मंदिर में रोजाना जायें।
12. शुक्रवार का व्रत रखें।
13. बछड़े वाली गाय का दान करें।
14. अपना पहनावा ठीक–ठाक रखें।

पहले भाव में स्थित मंगल का फल

लाल किताब में लग्नस्थ मंगल को युद्ध क्षेत्र का हीरो या न्याय की तलवार

कहा गया है। आपके 32 दाँत हो सकते हैं, जो कि शुभ मंगल की निशानी है। आपका आर्थिक विकास 28वें साल में हो सकता है। आपको दूसरों का उपकार कभी नहीं भूलना चाहिए, एवं हमेशा सत्य का साथ देना चाहिए।

आपकी शारीरिक संरचना सुदृढ़ होगी और आपको अपने कार्य में बड़ी सफलता प्राप्त होगी। आपको शनि से संबंधित वस्तुओं जैसे स्टील, लकड़ी एवं भवन निर्माण संबंधित वस्तुओं के व्यापार से विशेष लाभ प्राप्त हो सकता है। यदि आप अपने चाचा, ताउ, भतीजों अथवा दोस्तों के साथ कोई व्यवसाय शुरू करते हैं, तो इससे आपको लाभ प्राप्त होगा। आपको अपने भाई-बन्धुओं एवं ससुराल पक्ष से काफी सहयोग मिलेगा। आपको किसी के साथ झगड़े-फसाद से बचना चाहिए।

यदि आप किसी भी व्यक्ति से मुत में कोई सामान लेते हैं, तो यह आपकी सुख-शांति के लिए और आर्थिक स्थिति के लिए भी नुकसानदेह साबित होगा। आप अपने भाई-बहनों में सबसे बड़े हो सकते हैं। आपकी कोई भी बहन नहीं हो सकती है और यदि है, तो उसका लालन-पालन राजकुमारियों की तरह होगा।

आपकी कुण्डली में बुध या तो सूर्य के साथ या चंद्रमा के साथ या बृहस्पति के साथ स्थित है। आपको बिना कारण ही कई सारे गंभीर आरोपों का सामना करना पड़ सकता है। लाल किताब के अनुसार, ऐसी ग्रह स्थिति के कारण आपको अपनी उम्र के 13वें या 15वें या 28वें वर्ष में कष्ट का सामना करना पड़ सकता है।

जैसा कि मंगल लग्न में स्थित है, आपको बाल्य काल में उदर रोग एवं दाँतों के रोग हो सकते हैं। आप शत्रुओं से एवं धार्मिक लोगों से झगड़ा कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल या तो स्वग्रही है या उच्चस्थ है। लाल किताब के अनुसार, आप निरोग, यशस्वी एवं राज्य की तरफ से सम्मान पाने वाले होंगे।

लाल किताब के अनुसार, आपके लग्न में मंगल होने से आप कई व्यवसाय की ओर आकृष्ट हो सकते हैं, परन्तु किसी में भी सफलता मिलने की संभावना कम ही होगी। आपको ऐसा भ्रम नहीं पालना चाहिए, कि सिर्फ आप ही एक चालाक हैं, और बाकी सब मूर्ख हैं।

लाल किताब के अनुसार, आप अपने माता-पिता की अकेली संतान नहीं हो सकते हैं। आपके और भाई-बहन जरूर होंगे।

लाल किताब के अनुसार, आपको अपने दुश्मनों से किसी भी तरह की हानि होने की संभावना नगण्य है। आपको बुरी आदतों से बचना चाहिए।

पहले भाव में स्थित मंगल के उपाय और सावधानियाँ

1. आपको मुत में अथवा दान में कोई भी वस्तु नहीं लेनी चाहिए। (मंगल अशुभ)
2. आपको बुरे काम और झूठ बोलने से बचना चाहिए। (मंगल अशुभ)
3. आपको संतों, फकीरों, झाड़-फूंक करने वालों के साथ नहीं रहना चाहिए।
4. आपको हाथी दाँत की वस्तुओं के लेन-देन से बचना चाहिए। (मंगल अशुभ)

5. आपको मंगल से संबंधित वस्तुओं का व्यापार करना चाहिए।
6. आपको महागायत्री का पाठ करना चाहिए तथा हनुमान जी को सिंदूर का लेप करना चाहिए।
7. आपको मूंगा (लाल) धारण करना फायदेमंद होगा। यदि आपको मूंगा नहीं प्राप्त होता है, तो आप ताँबा भी धारण कर सकते हैं।
8. आपको अपने भाइयों की सेवा करनी चाहिए।
9. शुद्ध चाँदी धारण करना फायदेमंद रहेगा।
10. सौंफ का कारोबार आपके लिए फायदेमंद रहेगा।

सातवें भाव में स्थित बुध का फल

लाल किताब में सातवें भाव में स्थित बुध को ''दुनिया के लिए पारस'' कहा गया है। आप दूसरों की मदद करने में कभी भी पीछे नहीं रहेंगे। आप बहुत अधिक बुद्धिमान और कलम के धनी होंगे।

आपको हुनरमंदी (सीखी हुई कला) से फायदा होगा।

आप किसी झगड़े–फसाद या मुकदमेबाजी में नहीं फसेंगे।

आपकी कुण्डली में पहले भाव में कोई ना कोई ग्रह बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आप अपने परिवार की भली–भांति परवरिश करेंगे।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको समुद्री यात्राओं से विशेष लाभ प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में बुध पर केतु या मंगल की दृष्टि पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, आपकी बहन, बुआ, लड़की या साली पर इसका बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

सातवें भाव में स्थित बुध के उपाय और सावधानियाँ

1. काले रंग की भुण्डी गाय की सेवा करें।
2. बेटी का कन्यादान करें।
3. साझेदारी में कोई कारोबार न करें।
4. झूठी आशायें न लगायें।
5. साली से दूर रहें।
6. अपने बेटी की हर कामना पूरी करें और उसे अपनी मां की तरह सम्मान दें।
7. हीरा पहनें।
8. ब्याज पर धन न दें।
9. औरत का सम्मान करें।
10. अगर मुंह से थुक आता है, तो उसका इलाज करायें।
11. दुर्गा पाठ करवायें।
12. घर में कोई बिजली का सामान खराब पड़ा हुआ है, तो उसको ठीक करवा कर रखें।

चौथे भाव में स्थित शनि का फल

लाल किताब में चौथे भाव में स्थित शनि को ''पानी का सांप'' कह कर पुकारा गया है। मतलब यह है कि शनि का प्रभाव चौथे भाव में बहुत अधिक मंदा नहीं होता है।

जवानी के दिनों में आप थोड़ा–बहुत रसिक हो सकते हैं, परन्तु बाद में बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति वाले हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में शनि चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपका स्वास्थ्य खराब है, तो थोड़ा–बहुत शराब के सेवन करने से आपके स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है और शनि का फल खराब नहीं होगा।

आपको अपना मकान किसी जानकार ज्योतिषी से दिखाकर बनवाना चाहिए, अन्यथा आपके ननिहाल के लोगों पर इसका बहुत ही बुरा असर हो सकता है।

आपको अपना चरित्र साफ–सुथरा रखना चाहिए, अन्यथा आपके जीवनसाथी के लिए इसका बहुत ही बुरा असर हो सकता है।

आपको रात में दूध पीने से बचना चाहिए, अन्यथा आपके स्वास्थ्य पर इसका बहुत बुरा असर हो सकता है।

चौथे भाव में स्थित शनि के उपाय और सावधानियाँ

1. साँप को दूध पिलायें।
2. कौवों या भैंस को चावल और दूध खिलायें।
3. कुएं में चावल और दूध गिरायें।
4. तेल, उड़द और काले कपड़े का दान करें।
5. बहते हुए पानी में शराब बहायें।
6. अपने से नीच लोगों की सहायता करें।
7. अपना चरित्र ठीक रखें।
8. हरे और काले कपड़े न पहनें।
9. दूध या दूध से बनी वस्तुओं का सेवन कम करें।
10. मछली का शिकार न करें और ना ही खायें।

बारहवें भाव में स्थित राहु का फल

लाल किताब में बारहवें भाव में स्थित राहु को ''शेख चिल्ली'' कहकर पुकारा गया है। यहां स्थित राहु का फल कुण्डली में बुध की स्थिति के अनुसार प्राप्त होता है। आप जो भी सोचेंगे, उसका उल्टा परिणाम प्राप्त हो सकता है। आप फिजूलखर्ची कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में शनि शुभ स्थिति में है। लाल किताब के अनुसार, आप आध्यात्मिक व्यक्ति होंगे और आपकी रूचि योग आदि विषयों मे हो सकती है।

आपकी कुण्डली में राहु पर शत्रु ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, आप झगड़ालू प्रवृत्ति के व्यक्ति हो सकते हैं। आपके घर में धन की चोरी हो सकती है। आपको अपने परिवार का खर्च अकेले ही उठाना पड़ सकता है।

बारहवें भाव में स्थित राहु के उपाय और सावधानियाँ

1. आर्थिक स्थिति को ठीक करने के लिए अपनी आय में से कुछ भाग निकालकर अपनी बहन, पुत्री या बुआ को दें।
2. लाल कपड़े की छोटी सी बोरी बनाकर उसमें सौंफ रखकर अपने सिरहाने रखें।
3. रसोई घर में बैठकर खाना खायें।
4. बहते हुए पानी में कोयला बहायें।
5. हाथी को मूली खिलायें।
6. चाँदी की ठोस हाथी अपने घर में रखें।
7. चाँदी की ठोस हाथी अपने घर में रखें।
8. घर के आंगन में धुआं न करें।
9. घर के आखिरी में अंधेरी कोठरी बनवायें।
10. सरस्वती जी की पूजा करें।
11. दहेज में बिजली का सामान न लें।

छठवें भाव में स्थित केतु का फल

छठे भाव में बैठा हुआ केतु सामान्यतः शुभ फल नहीं देता है। आपकी संतान पर केतु का बुरा असर हो सकता है।

आपको कुत्तों से डर लग सकता है।

यदि आपकी मां जीवित हैं और आपके घर पुत्र जन्म लेता है, तो आपकी माता को चाहिए कि 43 दिन तक उस लड़के का मुंह न देखें, अन्यथा लड़के के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है।

इस दोष को दूर करने के लिए आपको 43 दिन तक 6 केले किसी धार्मिक स्थान पर दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में केतु अकेला बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आप अपने पिता की सहायता करेंगे, परन्तु अन्य रिश्तेदारों से आपके संबंध ठीक नहीं हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति शुभ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी संतान पर केतु का असर शुभ रहेगा।

छठवें भाव में स्थित केतु के उपाय और सावधानियाँ

1. बायें हाथ में सोने की अंगूठी पहनें।
2. संतान के लिए कुत्ता पालें।
3. अपनी बहन, बुआ, पुत्री, मौसी या भांजे की सेवा करें।
4. लहसुन, प्याज 6 दिन निरंतर जल में प्रवाहित करें। (यदि चंद्रमा चौथे भाव में न हो)
5. दूध में केसर डालकर पीयें।
6. लोहे की छड़ को गरम करके दूध में डूबायें और उसे पीयें।
7. 43 दिन तक किसी धार्मिक स्थान में केले दान करें।
8. यदि आपका पाला हुआ कुत्ता मर जाता है, तो दूसरा 15 दिन के अन्दर ही ले आयें।

लाल किताब उपाय से संबंधित सावधानियाँ और सामान्य नियम

1– एक दिन में केवल एक ही उपाय करें।

2– सभी उपाय सूर्योदय के बाद एवं सूर्यास्त से पहले करें। जो उपाय सूर्यास्त के बाद करने के लिए लिखा गया है, केवल उसे ही सूर्यास्त के बाद करें।

3– सबसे पहले छोटे उपाय, जो एक दिन के होते हैं, उन्हें करना चाहिए।

4– लंबे चलने वाले उपाय लागातार करें।

5– मासिक धर्म के दौरान महिलायें मंदिर जाने वाले उपाय न करें, इस दौरान अपने खून से संबंधित परिवार के किसी सदस्य से उपाय करवायें।

6– जिस उपाय को किसी खास दिन शुरू करने के लिए न कहा गया हो, उस उपाय को करने के लिए किसी दिन या तिथि जैसे अमावस्या, पूर्णिया आदि का विचार न करें। एक दिन वाले उपाय चौथ, नवमी एवं चतुर्दशी को कर सकते हैं, लेकिन लंबे चलने वाले उपाय इन तिथियों को शुरू न करें।

7– कुछ उपाय सप्ताह, मास या 43 दिन लगातार करने होते हैं, इन उपायों को बाद में शुरू करें। ध्यान रखें कि ऐसे उपाय बीच में न टूटें, अन्यथा शुभ फल प्राप्त नहीं होंगे। यदि लंबे उपाय करते समय किसी कारण से उपाय बीच में बंद करना पड़े तो उस दिन उपाय करने के बाद थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांधकर अपने पास रख लें और जब दुबारा उपाय शुरू करना हो तो वह चावल धर्म स्थान में दे दें या बहते पानी में प्रवाहित कर दें। उसके बाद उपाय शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल प्राप्त होगा।

8– यदि कोई उपाय जिंदगी भर के लिए करना है तो पहले उसे शुरू कर साथ––साथ एक––एक करके दूसरे उपाय करें।

9– जिस चीज/औजार से उपाय करें या जो भी सामान उपाय के लिए ले जायें, उसे वहीं छोड़ दें। लंबे चलने वाले उपाय में औजार आखिरी दिन छोड़ें।

10– जो चीज जल प्रवाह करें या धर्म स्थान में दें, उस दिन उस चीज का सेवन न करें।

11– उपाय के दिनों में शारीरिक संबंध स्थापित न करें।

Disclaimer

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, www.lalkitabnadi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.